

PAGE NO. 4: BOTTOM

# हट, मोह और अहंकार के बीच धर्म का सवाल उठाता 'धर्म नीति नियति'

P IC: DAINIK JAGRAN INEXT



● कलाकारों ने मंचन से मोहा मन.

[bareilly@inext.co.in](mailto:bareilly@inext.co.in)

**BAREILLY (13 Sep):** एसआरएमएस रिट्ठिम के प्रेक्षागृह में रविवार शाम डॉ. प्रभकर गुप्ता लिखित नाटक 'धर्म नीति नियति' का मंचन हुआ. अश्वनी कुमार के नाट्य रूपांतरण तथा अम्बुज कुकरेती और विनायक कुमार श्रीवास्तव के निर्देशन में प्रस्तुत नाटक ने महाभारत के युद्ध की कथा के ब्रजय मनुष्य के निर्णयों, कर्म और उनके परिणामों के आईने के रूप में प्रस्तुत किया. कहानी उस समय से शुरू होती है, जब श्रीकृष्ण पांडवों के शांति दूत बनकर हस्तिनापुर पहुंचते हैं और राजसी आतिथ्य छोड़ विदुर की कुटिया में ठहरते हैं. विदुरानी सुलभा की भक्ति और कृष्ण के प्रति

आत्मीयता का प्रसंग दर्शकों को भावुक करता है. राजसभा में कृष्ण युद्ध रोकने का अंतिम प्रयास करते हैं और पांच गांव तक का प्रस्ताव रखते हैं. दुर्योधन का अहंकार समझौते की हर संभावना समाप्त कर देता है. धृतराष्ट्र पुत्र-मोह और राजधर्म के बीच टलझे रहते हैं, जबकि विदुर, भीष्म और द्रोण नीति और सत्य की आवाज बनते हैं. युद्ध के बाद के पश्चाताप और आत्ममंथन तक पहुंचता है. विदुर के मार्गदर्शन में धृतराष्ट्र, गांधारी और कुंती मोह त्यागकर वनप्रस्थ की ओर प्रस्थान करते हैं. प्रस्तुति ने सवाल उठाया कि विनाश केवल युद्धभूमि में नहीं, बल्कि इन क्षणों में भी शुरू होता है जब मनुष्य सत्य जनते हुए मौन रहता है.